हज़ार रंग में डूबी हुई हवा

(राही मासूम रज़ा के सृजन-कर्म पर केंद्रित)

संपादक
नमिता सिंह
राम किशोर
अम्बरीन आफ़ताब

हज़ार रंग में डूबी हुई हवा

(राही मासूम रज़ा के सृजन-कर्म पर केंद्रित)

संपादक

नमिता सिंह

राम किशोर

अम्बरीन आफ़ताब

हंस प्रकाशन

नई दिल्ली

अनुक्रम

भूमिका : पुरोवाक् v

खण्ड-एक

राही मासूम रज़ा : विचारों के वातायन से

1. राही मासूम रज़ा के वैचारिक लेखन में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद 3
   आशिक बालौत
   रवींद्र सिंह
2. मुक़म्मल भारत की बेचैन खोज 24
   कमलानंद झा
3. राही की गंगौली और बदलता भारत 35
   नवीन जोशी
4. राही मासूम रज़ा का साहित्य और समकालीन संदर्भ 42
   गीता दुबे
5. सोश्ल-इज़्म के आए में बहुत देरी हो रही है... 50
   ज़ाहिद खान
6. राही मासूम रज़ा : एक सच्चा हिन्दुस्तानी 56
   क़ुरबान अली
7. राही मासूम रज़ा का साहित्य और समकाल 61
   शकील सिद्दीकी
8. भारतीयता और देशभक्ति के प्रश्न : हमारी साझी विरासत 70
   डॉ. मोहम्मद हुसैन डायर
9. साहित्यकार का सामाजिक दायित्व 77
   राम किशोर
10. वर्तमान समय के भयावह दौर का मर्सिया पाठ 81
    पूनम सिंह
11. राही की रचनाओं में मानवीय संवेदना 91
    डॉ. ममता खांडाल

खण्ड-दो

राही के उपन्यास : सृजन-संदर्भ

1. साम्प्रदायिकता का मारक ज़हर और टोपी शुक्ला 103
प्रो. राजेश मल्ल

2. विभाजन की त्रासदी और राही के उपन्यासों में स्त्री 110
डॉ. अम्बरीन आफ़ताब

3. 'आधा गाँव' उपन्यास में मौन व मुखर स्त्रियाँ 117
अमित कुमार चौबे
शिप्रा शुक्ला

4. आपातकाल, राही मासूम रज़ा और कटरा बी आर्ज़ू 126
शुभनीत कौशिक

5. इन्सानियत के भाष्यकार 'राही' और उपन्यास 'टोपी शुक्ला' 131
रज़िया पटेल

6. मानवीय संबंधों की जटिलता : 'ओस की बूँद' 136
डा. सादिया सिद्दीकी

7. राही का उपन्यास 'हिम्मत जौनपुरी' 145
सेराज खान 'बातिश'

8. दुर्गम राहों के राही : कटरा बी आर्ज़ू 157
डॉ. अमिता दुबे

9. सांप्रदायिकता की समस्या और 'ओस की बूँद' 163
अर्शिया रसूल

10. दिल एक सादा काग़ज़ : समकालीन यथार्थ एवं प्रासंगिकता 169
डॉ. तराना परवीन

11. अनूठे शिल्प का राजनीतिक उपन्यास : नीम का पेड़ 177
राजेन्द्र वर्मा

12. मुखौटे के पीछे का सच : सीन-75 182
अलका प्रमोद

13. राही मासूम रज़ा के उपन्यास और साम्प्रदायिकता के प्रश्न 187
डॉ. पूनम त्रिवेदी

खण्ड-तीन

राही की शायरी : जीवन की बुनियादी लय

1. 'लड़ाई तब खत्म होती है जब हम जीत जाते हैं...' राही की अनुपम काव्य-कथा : अठारह सौ सत्तावन 199
नमिता सिंह

2. दूर से सुनाई देने वाली आवाज़ 207
प्रो. महताब हैदर नक़वी

3. राही : एक गुमनाम शायर, मशहूर लेखक 212
नदीम हसनैन

4. राही की शायरी में जीवन की लय 217
डॉ. साएमा बानो

5. राही मासूम रज़ा की शायरी - एक जायज़ा 226
डॉ. उबैदा बेगम

खण्ड-चार

स्मृतियों में राही

1. मासूम मामू, राही मासूम रज़ा और राही साहेब 237
नदीम हसनैन

2. घर के सदस्य की तरह मिले राही 239
रज़िया पटेल

3. घूँट-घूँट वतन की याद... 240
डॉ. शबनम रिज़वी

लेखक परिचय **243**

खण्ड-तीन

राही की शायरी : जीवन की बुनियादी लय

1. 'लड़ाई तब खत्म होती है जब हम जीत जाते हैं...' राही की अनुपम काव्य-कथा : अठारह सौ सत्तावन 199
नमिता सिंह

2. दूर से सुनाई देने वाली आवाज़ 207
प्रो. महताब हैदर नक़वी

3. राही : एक गुमनाम शायर, मशहूर लेखक 212
नदीम हसनैन

4. राही की शायरी में जीवन की लय 217
डॉ. साएमा बानो

5. राही मासूम रज़ा की शायरी - एक जायज़ा 226
डॉ. उबैदा बेगम

खण्ड-चार

स्मृतियों में राही

1. मासूम मामू, राही मासूम रज़ा और राही साहेब 237
नदीम हसनैन

2. घर के सदस्य की तरह मिले राही 239
रज़िया पटेल

3. घूँट-घूँट वतन की याद... 240
डॉ. शबनम रिज़वी

लेखक परिचय **243**

राही मासूम रज़ा के वैचारिक लेखन में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद

आशिक बालौत
रवींद्र सिंह

भारतीय संविधान में लोकतांत्रिक व्यवस्था को अपनाते हुए धर्मनिरपेक्षता की पुरजोर वकालत की गयी है। इसीलिए हमारा देश लोकतांत्रिक ही नहीं, वरन् धर्मनिरपेक्ष भी है। लेकिन, जब हम भारतीय संविधान का अक्स देश में देखना चाहते हैं, तो उसका धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक स्वरूप दृष्टिगोचर नहीं होता। व्यावहारिक धरातल पर लोकतंत्र का वजूद लड़खड़ाने की वजह से अभिव्यक्ति की आज़ादी छटपटाती हुई दिखायी देती है। यहाँ तक कि लोकतंत्र का मंदिर कही जानेवाली संसद और विधानसभा में सांसदों व विधायकों के शपथ लेते समय धर्मनिरपेक्ष एवं लोकतांत्रिक मूल्यों को धार्मिक नारों से न केवल तार-तार किया जाता है, बल्कि कुछ सांसदों और विधायकों को ज़बरदस्ती धार्मिक नारे लगाने के लिए बाध्य भी किया जाता है। जब संसद व विधानसभा का यह हाल है तो जनता का क्या हाल होगा इसका आप स्वयं अंदाजा लगा सकते हैं। आज के विषम वातावरण में सांप्रदायिक विद्वेष की भावना को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि भारत में लोकतांत्रिक व्यवस्था एवं धर्मनिरपेक्ष मूल्य के अस्तित्व का होना बहुत ही ज़रूरी है। वास्तव में, देश की वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए यह महसूस होने लगा है कि भारतीय संविधान धर्मनिरपेक्ष है; लेकिन हम नहीं। देश में फैलती हुई ज़हरीली हवा को देखकर मन में यही बातें बार-बार आती रहती हैं कि आनेवाले समय में क्या होगा? मन में ये बातें इसलिए भी उठती रहती हैं क्योंकि हमारा परिवेश सांप्रदायिक शक्तियों द्वारा निर्मित हो रहा है। यह संकीर्ण वैचारिक हवा चंद्रशेखर आज़ाद, गाँधी, अंबेडकर, नेहरू, मौलाना आज़ाद, न जाने कितनी महान आत्माओं के सपने को धूल में मिलाने में कोई कसर नहीं छोड़ रही है। आज की सच्चाई यही है। इस सच्चाई की गहराई साहित्यकारों की दृष्टि में साफ तौर पर दिखायी देती है। साहित्यकारों में भी वे साहित्यकार, जो उन राहों से गुज़रते हैं, जहाँ हिंदुस्तानियत टूट रही है, बिखर रही